"सूर के काव्य में गीति तत्व"

मध्यकालीन कवि सूरदास हिन्दी के रससिद्ध कवि हैं। उनके काव्य में गेयता का तत्व भरपूर मात्रा में विद्यमान है। गीति काव्य के आवश्यक गेयता, कोमलकान्त मधुर पदावली, सरल पद-विन्यास, मधुर भाव योजना सूर के काव्य में प्रचुर मात्रा मे उपलब्ध हैं। राधा-कृष्ण के प्रेम-लीला के मधुर चित्रों का अंकन सूरदास ने अत्यन्त तन्मयता के साथ अपने पदों में किया है। मन की तरल भावानुभूतियों का मनमोहक और आकर्षक चित्र वे अपने पदों में अभिव्यक्त करते हैं, जैसे यह पद —

"बूझत स्याम कौन तू गोरी ?
कहाँ रहति काकी है बेटी नहिं देखी कबहूँ ब्रजखोरी।"

गीतिकाव्य के लिए आवश्यक तत्व तन्मयता, संगीतात्मकता, गेयता, सरलता, भाषागत माधुर्य और संक्षिप्तता सूरदास के पदों में उपलब्ध है। राधा-कृष्ण के प्रेम का वर्णन करने में उन्हें पूरी सफलता मिली है। गाय दुहते हुए श्रीकृष्ण किस प्रकार एक धार दोहनी में और दूसरी राधा के पास पहुँचा रहे हैं, इसका उदाहरण इस पद मे देखने को मिलता है —— "धेनु दुहत अति ही रति बाढ़ी।
एक धार दोहनि पहुँचावति एक धार जहँ प्यारी ठाढ़ी॥"

सूर की उक्तियाँ अनेक प्रकार के मधुर भावों से रससिक्त प्रकृत जीवन की ऐसी अनुभूतियाँ हैं जिनमें सरलता, संक्षिप्तता, मधुरता और तन्मयता व्याप्त है। वियोग श्रृंगार के अन्तर्गत उन्होंने गोपियों की विरह विकलता के ऐसे मधुर चित्र अंकित किए हैं जिन्हें पढ़कर पाठकों का हृदय रस विभोर हो उठता है।

प्रियतम कृष्ण के प्रति अपनी अनन्यता व्यक्त करती हुई गोपियाँ कहती हैं —

"हमारे हरि हारिल की लकरी ।
मन क्रम बचन नन्द-नन्दन सौं यह दृढ़ करि पकरी ॥"

इतना ही नहीं विरहिणी गोपियों को मधुबन की हरियाली अच्छी नहीं लगती, बहती हुई यमुना अच्छी नहीं लगती, पुष्पित कमल और उन पर मँडराते हुए भँवरों की गुँजार अच्छी नहीं लगती —

"बिनु गोपाल बैरिन भई कुंजें ।
तब ये लता लगति अति सीतल अब भई विषम ज्वाल की पुंजें ।
वृथा बहती जमुना खग बोलत, वृथा कमल फूलैं अलि गुंजैं ॥"

सूरदास के पदों में गीतिकाव्य के सभी तत्व उपलब्ध हैं। भाषा की मधुरता, पदलालित्य, शब्द योजना, सरलता एवं हृदयस्पर्शिता के कारण सूर के पद जनता के कण्ठहार बने हुए हैं। गीतिकाव्य की रचना मुक्तक शैली में होती है। सूर की रचनाएँ भी मुक्तक शैली में हैं। सूरदास के संयोग वर्णन का उल्लेख करते हुए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है, "प्रेम । संगीत मय जीवन की एक गहरी चलती धारा है, जिसमें अवगाहन करने वाले को दिव्य माधुर्य के अतिरिक्त और कहीं कुछ नहीं दिखाई पड़ता। राधा-कृष्ण के रंग-रहस्य के इतने प्रकार के चित्र सामने आते हैं कि सूर का हृदय प्रेम की नाना उमंगों का अक्षय भण्डार प्रतीत होता है।" रूप सौन्दर्य को हृदय-द्वार तक पहुँचाने वाले नेत्र ही हैं। गोपियाँ इन नेत्रों की चपलता और निरंकुशता को कहीं कोसती हैं तो कहीं इनकी कभी न बुझने वाली प्यास का उल्लेख करती हैं —

"मेरे नैना विरह की बेलि बई ।
सींचत नीर नैन के सजनी मूल पताल गई ॥"

सूरदास की वचनवक्रता भी भावप्रेरित है। इसलिए वह रमणीय है तथा मन को अनुरंजित करती है। गोपियां उद्धव से कहती हैं —

"निर्गुन कौन देस को बासी?
मधुकर हँसि समुझाय सौंह दै बूझति साँच न हाँसी॥"

कुछ विनोद, कुछ चपलता, कुछ भोलापन, कुछ धनिष्ठता आदि कितनी ही बातें इस पद में टपकती हैं।

सूरदास के गीतों में आत्माभिव्यंजन, भाव-तन्मयता, मधुरता, संगीतात्मकता एवं संक्षिप्तता जैसे सभी गुण विद्यमान हैं। सूर के पदों में काव्यकला एवं संगीतकला का ऐसा समन्वय है कि पाठक तन्मय होकर रसमग्न हो जाता है। मधुर भावों की अभिव्यक्ति के लिए गीति शैली का प्रयोग अत्यन्त उत्कर्षवर्द्धक माना गया है। सूरदास ने अभिमान, दाम्पत्य भाव, सख्यभाव एवं माधुर्यभाव की अभिव्यंजना के लिए इसी शैली को अपनाया और उसमें उन्हें अपूर्व सफलता भी प्राप्त हुई। प्रवाहपूर्ण ब्रजभाषा के नैसर्गिक माधुर्य ने सूर के गीतों को और अधिक मधुर एवं सरस बना दिया है। निस्संदेह ही सूर का गीति-काव्य अपूर्व एवं विशिष्ट है। सूर के पदों में प्रयुक्त अनेक राग-रागनियों में प्रमुख हैं — राग बिलावल, राग सारंग, राग सोरठ, राग आसावरी, राग कान्हरा, राग केदारा, राग मल्हार, राग संसोरी, राग धनाश्री, राग रामकली आदि। कृष्ण के प्रेम में पगी गोपियों के रसिक्त हृदय की भावानुकृतियों को सूर ने गीतिकाव्य के द्वारा अभिव्यक्त कर पाठकों को मधुर भावों में अवगाहन करने का जो सुअवसर प्रदान किया है, उसके लिए हिन्दी काव्य जगत उनका सदैव ऋणी रहेगा।